KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A2 PAGE NO.5-7
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

18वीं शताब्दी में बीकानेर राज्य के बीदावत राठौड़ों के साथ सम्बन्ध

[1]सुरेन्द्र सिंह
[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

बीदावाटी के प्रारम्भिक शासक केवल ठिकानेदार के रूप में नहीं अपितु कुलीय सम्बन्ध के आधार बीकानेर के सहयोगी शासक के रूप में कार्य करते थे। आरम्भ में बीकानेर राजय तथा बीदावटी राज्य एक समान शक्तिशाली थे। बीदावत सरदार बीकानेर रियासत को आवयकता पड़ने पर जो सैनिक सहायता देते थे वह सेना के रूप में नहीं अपितु नैतिक व सामाजिक दायित्व के रूप में देते थे। बीकानेर के शासक राव बीका के उत्तराधिकारी समय–समय पर अपनी शक्ति के विकास का प्रयास करने लगे तथा बीदावाटी की स्वतन्त्र शक्ति को नियन्त्रित करने के उपाय ढूंढने लगे। इस हेतु अनेक अवसरों पर बीदावतों व बीकानेर राज्य के संबंधों में तनाव उत्पन्न हुए। इसकी कीमत बीकानेर शासक राव लूणकरण व जैतसी को अपने प्राण देकर चुकानी पड़ी, परन्तु समय के साथ–साथ बीदावत ठिकानों के प्रशासन में बीकानेर राज्य का हस्तक्षेप बढ़ने लगा। बीदावाटी के ठिकानेदार शासक के रूप में किसानों से लगान व जनता से कर आदि वसूल करते थे। वे अपने–अपने ठिकानों में खुद मुखत्यार होते थे। प्रजा के प्रति उनका मुख्य कर्तव्य चोर डाकूओं आदि से रक्षा करना तथा व्यवस्था बनाए रखना होता था। बीकानेर के शासक कल्याणमल के पश्चात् बीदावाटी के प्रशासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। इसके बाद इनके संबंधों में ठहराव आना शुरू हो गया। इन्हीं बनते–बिगड़ते संबंधों को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : *ठिकानेदार, व्यवस्था, बीदावाटी, संबंध, अवसर, परिवर्तन*

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org